टिप्पणी

2

सैन्य अध्ययन की अवधारणा और विकास

भारत के इतिहास से आप को यह ज्ञान हो गया होगा कि किस प्रकार सेनाएं गठित की गई थीं और उन्होंने किस प्रकार लोगों की रक्षा की। यदि सेनाएं इतने समय पहले से हैं और वे शासन का अनिवार्य भाग हैं तो यह समझना महत्वपूर्ण है कि सेनाएं किस प्रकार काम करती हैं और सरकारों को किस प्रकार उनका प्रयोग करना चाहिए। इसे ही सैन्य अध्ययन कहते हैं? सैन्य अध्ययन सेना से जुड़े सभी विषयों तथा सैनिकों और राजाओं द्वारा युद्ध कला सीखने से सम्बन्धित अध्ययन है।

इस पुस्तक के विभिन्न अध्याय युद्ध के लिए सेना को तैयार करने के तरीकों तथा सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर देंगे। जैसे रैंकों के ढांचें क्या है? सेनाओं के पास कौन से हथियार होते हैं? आज की दुनियां में सेनाओं की भूमिका और दायित्व क्या हैं? सरकार को सेनाओं का प्रयोग किस प्रकार करना चाहिए? पुराने समय में सेनाओं को कैसे प्रशिक्षित किया जाता था? किस प्रकार समय के साथ प्रशिक्षण में परिर्वतन आया इत्यादि?

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद, आप :

- प्राचीन भारत में सैन्य शिक्षा संगठनों का वर्णन कर सकेंगे;
- प्राचीन काल में और वर्तमान में सैन्य अध्ययन के विषयों को पढ़ाने के तरीकों के बीच तुलना कर सकेंगे;
- सेनाओं में आए बदलावों को जान सकेंगे।

2.1 प्राचीन भारत में सैन्य अध्ययन

सैन्य अध्ययन के बारे में जानने से पहले प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली के बारे में जानना ज़रूरी है। पहली व्यवस्था गुरुकुल की थी। गुरूकुल एक आवासीय विद्यालय होते थे जहां राजाओं के बच्चों के साथ सभी बच्चों को पढ़ने के लिए भेजा जाता था। गुरुकुल के बारे में जानने के लिए ज़रूरी बातें निम्नलिखित हैं–

1) ये आवासीय विद्यालय होते थे। यहीं गुरु का घर होता था। गुरु और शिष्य दोनों एक साथ गुरुकुल में रहते थे।

2) विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी लगभग दस वर्ष तक विद्यालय में रहते थे।

3) पढ़ाए जाने वाले विषयों में भाषा, व्याकरण, विज्ञान, गणित और वेद जैसे विषय होते थे।

4) गुरु सैन्य विषयों जैसे हथियारों का प्रयोग करना, शारीरिक प्रशिक्षण तथा युद्ध कौशल भी सिखाते थे।

5) राजाओं के पुत्रों के साथ सभी विद्यार्थियों के लिए सैन्य विषयों का अध्ययन अनिवार्य होता था।

6) गुरुकुल में जीवन कठोर होता था और अनुशासित दिनचर्या का दृढ़ता से पालत किया जाता था।

7) शिक्षा नि:शुल्क होती थी और इसमें गुरुकुल में रहना भी शामिल होता था। उन दिनों नि:शुल्क शिक्षा देना सम्भव था क्योंकि राजा एवं अन्य धनी लोग गुरुकुल को दान देते थे।

8) गुरुकुल की अवधारणा में गुरु के साथ रहना और दैनिक क्रियाकलापों में गुरु की सहायता करना जैसे खेती करना, सफाई करना तथा लकड़ी काटना इत्यादि शामिल थे। अत: विद्यार्थी जीने के विभिन्न व्यवहारिक पक्षों को सीखते थे। इस प्रकार विद्यार्थी सिद्धान्त और उनका व्यवहारिक प्रयोग, दोनों एक साथ सीखते थे ताकि प्रत्येक विद्यार्थी एक सच्चरित्र व्यक्ति बन सके।

2.1.1 विद्यालयों के प्रकार

गुरुकुलों के अतिरिक्त अन्य प्रकार के विद्यालय भी थे। दक्षिण भारत में मन्दिर सभी सांस्कृतिक गतिविधियों के केन्द्र थे और शैक्षणिक संस्थान मन्दिरों का भाग होते थे। महत्वपूर्ण मन्दिरों में विद्यालय और महाविद्यालय थे। कुछ स्थानों पर विशेष विषयों में उच्च शिक्षा देने के लिए स्नातकोत्तर संस्थान भी थे।

मन्दिरों से जुड़े शैक्षणिक संस्थानों को शाला कहते थे। ये विद्यालय आवासीय प्रकार के विद्यालय थे, जहां विद्यार्थी अध्ययन पूरा होने तक नि:शुल्क शिक्षा के साथ-साथ आवास, भोजन, कपड़े तथा अन्य सुविधाएं भी नि:शुल्क प्राप्त करते थे। 8वीं सदी में चेरा राजा अई प्रथम ने केरला में शाला व्यवस्था स्थापित की थी। पाठ्यक्रम और पढ़ाने का तरीका गुरुकुल जैसा ही था। 'सालायस' के साथ कलारी विद्यालय भी था, जिसकी युद्ध कला और सैनिक प्रशिक्षण में विशेषज्ञता थी।

2.1.2 कलारी और शारीरिक शिक्षा

कलारी दक्षिण भारत के महत्वपूर्ण शिक्षा संस्थानों में से एक था। यह एक सैन्य स्कूल था जहां शारीरिक शिक्षा के कठिन पाठ्यक्रम तथा आक्रामक एवं रक्षात्मक विज्ञान में अध्ययन के साथ-साथ सामान्य शिक्षा भी दी जाती थी। केरल के राजा शिक्षा के महान संरक्षक थे और सैन्य स्कूलों में कलारिस की स्थापना का श्रेय उन्हीं को जाता है। पणिकर अथवा कुरुप इसकी अध्यक्षता करते थे।

चित्र : कलारीपट्टु

यहां के युवाओं को हथियारों का प्रयोग करने के साथ-साथ लड़ने की कला जैसे फैन्सिंग, बाक्सिंग और कुश्ती सिखाई जाती थी। नम्बूदरी युवकों ने भी 11वीं सदी की लड़ाईयों के दौरान कलारी में सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया था। कलारी में प्राप्त प्रशिक्षण को कलारीपट्टु कहते थे।

यह वहां के युवाओं के लिए शारीरिक शिक्षा की भरी पूरी योजना थी। सबसे होनहार प्रशिक्षु को 'मर्म' (Marmas) अर्थात शरीर के संवेदनशील हिस्सों के बारे में पढ़ाया जाता था। कलारी का उद्देश्य नायर्स की 'लड़ाका' भावना को प्रोत्साहित करना तथा उन्हें युद्ध के लिए सक्षम बनाना था।

2.1.3 शारीरिक शिक्षा

प्राचीन काल में शारीरिक स्वस्थ को सबसे अधिक महत्व दिया जाता था विशेष रुप से राजाओं एवं उच्च कोटि के योद्धाओं द्वारा। शारीरिक शिक्षा में मजबूती, दौड़ना, तैराकी और भरोत्तोलन शामिल होते थे। शारीरिक शिक्षा के साथ खेल कूद भी पाठ्यक्रम के महत्वपूर्ण भाग होते थे।

प्राचीन भारत में खेलों की महान परम्परा थी जिसे कई पीढ़ियों और संस्कृति के माध्यम से आगे बढ़ाया गया। खेलकूद केवल समय व्यतीत करने के लिए नहीं अपितु मानसिक क्षमता को विकसित करने तथा शारीरिक अनुकूलता को बनाए रखने के लिए होते थे। सैनिकों द्वारा खेले जाने वाले लोकप्रिय खेलों में चतुरंग, शतरंज, कुश्ती और तीरअंदाजी शामिल होते थे।

2.1.4 उच्च शिक्षा के केन्द्र

गुरुकुलों के अतिरिक्त उच्चतर शिक्षा के लिए अकादमियाँ होती थीं जिन्हें आजकल हम कॉलेज कहते हैं। इनमें पढ़ाये जाने वाले विषय के आधार पर इन्हें परिषद, आश्रम, विद्यापीठ और घटिका इत्यादि कहा जाता था। उस समय के विश्व स्तर पर प्रसिद्ध भारतीय संस्थानों में तक्षशिला और नालन्दा विश्वविद्यालय शामिल हैं।

प्राचीन भारत में शिक्षा के अन्य केन्द्रों में वल्लभी, श्रृंगेरी और कांची जैसे स्थान थे।

क्रियाकलाप 2.1

क्या आप शतरंज खेलना जानते हैं? इन्टरनेट पर देखिए कि शतरंज कैसे खेला जाता है। यह विरोधी राजा और उसकी सेना को हराने की रणनीति बनाने में मस्तिष्क को प्रशिक्षित करती है।

पाठगत प्रश्न 2.1

1. शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली की किन्हीं दो विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
2. प्राचीन भारत में उच्चतर शिक्षा की किन्हीं तीन अकादमियों के नाम लिखिए।
3. प्राचीन केरल में सैन्य स्कूल का नाम .... था।
4. आमतौर पर एक विद्यार्थी गुरुकुल में .... वर्ष व्यतीत करता था।

2.2 सैन्य शिक्षा

सैन्य विज्ञान को प्रायः धनुर्वेद कहा जाता था। आश्रमों और गुरुकुलों में अनेक विभाग होते थे। सैन्य विज्ञान से सम्बन्धित विभाग को महेन्द्रस्थान कहा जाता था। आपने इतिहास में पढ़ा है कि सेनाओं का गठन और सैनिकों द्वारा हथियारों का प्रयोग किस प्रकार किया जाता था।

भारत में प्रत्येक सेना के पास रथ, हाथी, घुड़सवार और पैदल सेना होती थी। इसको चतुरंग बल कहा जाता था। अतः सैनिक किस प्रकार लड़ना सीखते थे? सैन्य शिक्षा को दो प्रकार की शिक्षा में बांटा गया था। पहला सैनिक का निजी प्रशिक्षण था और दूसरा एक लड़ाका ईकाई के रुप में सेना का प्रशिक्षण था।

2.2.1 व्यक्तिगत प्रशिक्षण

सभी सैनिकों और राजाओं के पुत्रों को गुरुकुलों में एक साथ जाना होता था। सभी को समान रूप से प्रशिक्षित किया जाता था। केवल उन्हीं विद्यार्थियों को धनुर्वेद अथवा हथियारों के साथ लड़ने की कला का प्रशिक्षण दिया जाता था जो हथियारों पर ठीक नियन्त्रण रख पाते थे। दूसरे शब्दों में युद्ध कौशल सीखने में गुरुकुल पहला कदम होते थे।

टिप्पणी

प्राचीन काल में सैन्य प्रशिक्षण की व्यवस्था केवल राज्य के द्वारा ही नहीं की जाती थी अपितु यह व्यक्तिगत शिक्षकों द्वारा भी की जाती थी। प्रत्येक गांव में सैन्य प्रशिक्षण शिविर होते थे जहां ग्रामीणों को आत्मरक्षा के लिए सैन्य शिक्षा दी जाती थी।

2.2.2 सामूहिक प्रशिक्षण

गुरुकुलों में प्राथमिक शिक्षा के बाद व्यक्तियों को सैनिकों के रूप में प्रवेश दिया जाता था और सेना की विभिन्न इकाईयों में रखा जाता था। प्रत्येक इकाई की युद्ध में विशेष भूमिका होती थी। घुड़सवार सैनिक घुड़सवारी और घोड़े पर बैठकर लड़ने में विशेषज्ञ होते थे। इसी प्रकार रथ के सारथी अच्छे सारथी होते थे जो रथ को बड़ी तेज़ी से निश्चित स्थान पर पहुंचा सकते थे।

हाथी सेना घुड़ सेना से अलग होती थी। सेना की इन सब अलग-अलग इकाइयों को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती थी ताकि वे युद्ध के मैदान में पूरे कौशल के साथ इनका प्रयोग कर सकें। आपने चाणक्य का नाम तो अवश्य सुना होगा जो चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में एक प्रसिद्ध दार्शनिक, विद्वान और शिक्षक थे। 'अर्थशास्त्र' उनकी प्रसिद्ध कृति है। अपनी पुस्तक में वह लिखते हैं कि सेना प्रतिदिन प्रात: एक स्थान पर एकत्र होती थी और अपना प्रशिक्षण प्रारम्भ करती थी। यह प्रशिक्षण शारीरिक प्रशिक्षण से प्रारम्भ होता था उसके बाद व्यक्तिगत हथियारों का प्रशिक्षण होता था। पशुओं के साथ काम करने वाले सैनिकों को अपने पशुओं के साथ समय बिताना पड़ता था और उनके साथ प्रशिक्षण लेना होता था। प्रशिक्षकों को, एक टीम के रुप में लड़ने तथा युक्तियों को प्रयोग करने के लिए सैनिकों को प्रशिक्षित करना होता था।

2.2.3 सैन्य इकाईयों का प्रशासन

सैनिकों तथा सैन्य इकाईयों को प्रशिक्षण देने के अतिरिक्त सैन्य इकाईयों का प्रशासन देखने के लिए विभाग होते थे। अफसरों, पुरुषों और अधिकारियों को उनके कार्य के अनुरूप शिक्षा दी जाती थी। उदाहरण के लिए एक महावत (हाथी का नियन्त्रक) को पशु के व्यवहार, उसको नियन्त्रित करने तथा उसे क्या और कब खिलाना है, की शिक्षा दी जाती थी।

अफसरों जैसे कि सेनापति को कानून और न्याय की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक होता था ताकि वह अपने सैनिकों को अनुशासित रख सके।

राजकुमारों के लिए पाठ्यक्रम में धनुर्वेद, नीति शास्त्र, हाथियों को साधना तथा रथ चलाना, चित्रकला और लेखन, कूद लगाना और तैराकी शामिल होती थी।

सैन्य शिक्षा अन्य प्रकार की शिक्षा से बिल्कुल अलग है। सैनिकों और उनके नेताओं का प्रशिक्षण युद्ध में उनके कार्य और भूमिका के अनुरूप होता है।

पाठगत प्रश्न 2.2

1. आश्रमों और गुरुकुलों में सैन्य अध्ययन की शिक्षा देने वाले विभागों में नाम लिखिए।
2. प्राचीन भारत में राजकुमारों को पढ़ाए जाने वाले किन्हीं तीन विषयों के नाम लिखिए।

2.3 सैन्य अध्ययन का विकास

वैदिक काल से लेकर आज तक अनेक परिवर्तन हुए हैं जैसा कि हमने इतिहास में पढ़ा है। मुस्लिम शासकों के साथ मकतबों और मदरसों में शिक्षा प्रदान करने की इस्लामिक प्रणाली आई। इस के बाद जब ब्रिटिश आए तो वे अपने साथ स्कूलों और कॉलजों में शिक्षा की अंग्रेजी प्रणाली लेकर आए। मुस्लिम शासकों और ब्रिटिश, दोनों ने उच्चतर शिक्षा को प्रोत्साहित किया हालांकि सेना के अफसरों और सैनिकों को प्रशिक्षण देने की अवधारणा में समय के साथ परिवर्तन आया।

अंग्रेजों ने अफसरों के प्रशिक्षण के लिए विशेष अकादमियों का गठन किया। सैन्य अध्ययन की शिक्षा सैनिकों और अफसरों के लिए अलग-अलग हो गई। यह अफसरों और सैनिकों के लिए एक जैसी नहीं रह गई। अफसरों के लिए इन्डियन मिलेट्री एकेडमी और सैनिकों के लिए विभिन्न स्थानों पर रेजीमेण्टल केन्द्र खोले गए।

2.3.1 मध्यकालीन भारत में सैन्य शिक्षा

हमनें देखा कि प्राचीन भारत में किस प्रकार युद्ध कौशल में प्रशिक्षण दिया जाता था। आइए, अब देखें कि जब मुसलमान शासकों ने भारत पर अपना शासन जमाया तो क्या परिवर्तन आए। मुगल शासन के दौरान शेष भारत में क्या बदलाव आए। मुख्य परिवर्तन थे :

- आग्नेय अस्त्रों का प्रयोग
- तोपखाना अथवा बन्दूकों का प्रयोग
- घुड़सेना और तीरंदाजों का प्रयोग
- रणक्षेत्र में प्रयुक्त युक्तियों में परिवर्तन

इन परिवर्तनों के कारण विषय बदल गए। विषयों में परिवर्तन के साथ प्रशिक्षण के तरीके और स्थान बदल गए। उदाहरण के लिए पुराने समय में कोई भी खुला मैदान स्कूल में बदला जा सकता था। परन्तु आग्नेय हथियारों और बन्दूकों के आ जाने से, सैनिकों को प्रशिक्षण देने के लिए बड़े क्षेत्रों की पहचान की गई जहां फायर रेन्ज जैसी सुविधाएं स्थापित की गई।

तोपखानों में प्रशिक्षण के लिए लम्बे चौड़े क्षेत्रों की आवश्यकता क्यों थी? इसका एक कारण आग्नेय अस्त्रों से सुरक्षा के लिए तथा बन्दूकों द्वारा लक्ष्य तय करके गोली चलाने के लिए आवश्यक दूरी की ज़रूरत को पूरा करने के लिए लम्बे चौडे क्षेत्र चुनने की आवश्यकता एक कारण थी।

टिप्पणी

2.3.2 सेना में प्रशिक्षण के चरण

तालिका 2.1 प्रशिक्षण ढांचा

1) **लड़ने के लिए प्रशिक्षण :** सैनिकों तथा सेना की इकाईयों के लिए लड़ने हेतु प्रशिक्षण आयोजित किये जाते थे। इस प्रशिक्षण में खेल शामिल होते थे जो लड़ने में सहायक होते थे। सेना को हर समय युद्ध के लिए सतर्क और तैयार रहना होता है। इसलिए उनका प्रशिक्षण निरन्तर होता है और यह सैनिकों के लिए दैनिक प्रक्रिया का हिस्सा होती है। युद्ध के आधारभूत प्रशिक्षण में निम्नलिखित प्रशिक्षण शामिल होते हैं:

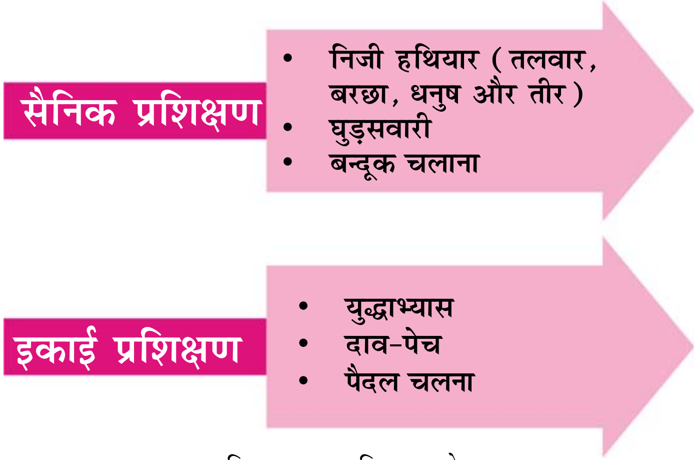

तालिका 2.2 प्रशिक्षण के प्रकार

2) **खेल और मुकाबले :** पूरे विश्व में सेनाओं का विश्वास है कि युद्ध हेतु प्रशिक्षण के लिए खेल प्रत्येक सैनिक के लिए बहुत उपयोगी हैं। योद्धाओं में नैतिकता और टीम भावना स्थापित करने के लिए खेलों का प्रभाव पहत्वपूर्ण है। खेल के मैदान में प्रदर्शित मूल्य ही एक सैनिक के लिए आदर्श होते हैं। आयोजित खेल और मुकाबले इस प्रकार होते थे–

क) हथियार सहित और निहत्थे लड़ना

ख) तीरंदाज़ी, घुड़सवारी और रथों की दौड़ करना

ग) मुक्केबाजी, कुश्ती और तैराकी के मुकाबले

घ) शिकार करना

3) **खेलों के लाभ**

   क) मज़बूती, साहस, वीरता और इमानदारी के गुण पैदा करना

   ख) लड़ने की भावना और जीतने की योग्यता पैदा करना

   ग) मानसिक अनुकूलता और तेज़ी से सोचना

   घ) सेना की टुकड़ियों और अफसरों के बीच सहयोगी भाव निर्मित करना

4) **निरीक्षण :** एक सुव्यवस्थित राज्य में अपनी सेना को युद्ध कौशल में प्रशिक्षित और युद्ध के लिए हर समय तैयार रखने की परम्परा थी। उनकी तैयारी को देखने के लिए निरीक्षणों की भी आवश्यकता होती थी। समय-समय पर राजा, सेना के प्रभारी मन्त्री तथा सेनापति द्वारा निरीक्षण किया जाता था।

ऐसे निरीक्षणों के दौरान किसी प्रकार के अभ्यास और चाल चलने की योग्यता को प्रदर्शित किया जाता था। कमांडिंग आफिसरों से भी अपेक्षा की जाती थी कि वे घुड़सवारी, तीरंदाजी, वीरता में आधारभूत सैन्य कौशलों में अपनी निपुणता को दर्शाएं और उनकी टुकड़ी अपने हथियारों के साथ नियमित अभ्यास करे।

2.3.3 ब्रिटिश इन्डिया में सैन्य शिक्षा

थॉमस ने 1891 में लिखा था, ऐसा कोई देश नहीं है जहां भारत की तरह शिक्षा प्राप्त करने के प्रति लगाव इतना पुराना और इतना टिकाऊ तथा प्रभावी रहा हो। उसके अनुसार अंग्रेजों को भारत में प्राथमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा की व्यापक शैली देखने को मिली जहां प्राथमिक शिक्षा में व्यवहारिक ज्ञान और उच्चतर शिक्षा में मुख्य रुप से साहित्य, दर्शन और धार्मिक शिक्षा शामिल थी।

लगभग 150 वर्षों तक अंग्रेज भारत में व्यापार बढ़ाने और विजय प्राप्त करने में लगे रहे। भारतीय टुकड़ियों का शैक्षिक प्रशिक्षण ईस्ट इन्डिया कम्पनी की स्थापना के साथ प्रारम्भ हुआ। भारत में सेना के लिए शिक्षा व्यवस्था का प्रारम्भ ब्रिटिश रेजीमेण्टल स्कूलों की स्थापना के साथ हुआ जिन्होंने ब्रिटिश टुकड़ियों को प्रशिक्षण दिया।

कुछ ब्रिटिश रेजीमेण्टों ने टुकड़ियों को प्रशिक्षण देने के लिए सार्जेन्ट बुलाए जिन्हें स्कूल मास्टर कहा जाता था। लेकिन टुकड़ियों की संख्या के अनुपात में स्कूल मास्टर्स और स्कूल मिस्ट्रेस की संख्या न के बराबर थी। इसके परिणाम स्वरूप कमांडिंग आफिसर्स को शैक्षणिक योग्यता प्राप्त नान-कमीशण्ड आफिसर्स को कार्यवाह मास्टर्स नियुक्त करने की अनुमति थी। इस प्रकार सैनिक टुकड़ियों के लिए औपचारिक शिक्षा की नई प्रणाली शुरु हुई।

2.3.4 क्राऊन के तत्वाधान में शिक्षा

1774 से 1785 के बीच ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने ब्रिटिश और यूरोपीय टुकड़ियों के लिए अनेक रेजीमेण्टल केन्द्र खोले। ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने भारतीय सिपाहियों को शिक्षित करने की अधिक परवाह नहीं की। हालांकि 1857 के विद्रोह के बाद महारानी ने भारत के शासन की

बागडोर ईस्ट इन्डिया कम्पनी से अपने हाथों में ले ली थी। स्थानीय सिपाहियों को लेकर सेना की नई और कई टुकड़ियां खड़ी की गई। क्राऊन के अन्तर्गत सैन्य शिक्षा में दूरगामी परिवर्तन हुए। ये परिवर्तन निम्नलिखित थे–

क) शैक्षणिक प्रशिक्षण के लक्ष्य और उद्देश्यों को पहली बार परिभाषित किया गया।

ख) समय-समय पर शैक्षणिक प्रशिक्षण की प्रगति के साथ चलने के लिए संगठनात्मक ढांचा तैयार किया गया।

ग) सैन्य प्रमाण पत्र शुरु किए गए जिनको वेतन और पदोन्नति के साथ जोड़ा गया था।

घ) सेना के प्रशिक्षण के लिए रोमन उर्दू को अपनाया गया।

ड.) शैक्षणिक प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण अधिसूचनाएं जारी की गई।

च) ब्रिटिश और इन्डियन टुकड़ियों के लिए प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु 1921 में आर्मी एजुकेशनल कोर्प्स को खड़ा किया गया।

सैन्य प्रशिक्षण का भारतीयकरण:

स्वतंत्रता पूर्व भारतीय सेना में प्रशिक्षण की दोहरी प्रणाली थी। सैनिकों को अलग अलग क्षेत्रों जैसे पंजाब, तमिलनाडु और बिहार इत्यादि से भर्ती किया जाता था। इनमें से प्रत्येक रेजीमेण्ट के रेजीमेण्ट्स केन्द्र होते थे जहां सैनिक औपचारिक शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त करते थे। अफसरों के लिए अलग एकेडमियां बनाई गई थीं।

इन केन्द्रों के अतिरिक्त अनेक स्कूल भी स्थापित किए गए। ये थे –

- राष्ट्रीय इन्डियन मिलिट्री कॉलेज देहरादून की स्थापना मार्च 1922 में की गई। यह कॉलेज आधारभूत स्कूल शिक्षा और शारीरिक शिक्षा उनको प्रदान करता था जो भारतीय सेनाओं में अफसर बनना चाहते थे।
- चैल मिलिट्री स्कूल (सबसे पुराना मिलिट्री स्कूल) की स्थापना फरवरी 1922 में की गई थी
- अजमेर मिलिट्री स्कूल
- बेलगाम मिलिट्री स्कूल
- धौलपुर मिलिट्री स्कूल
- 1962 के युद्ध के बाद प्रत्येक राज्य में सैनिक स्कूलों की स्थापना की गई जो नेशनल डिफेन्स एकेडमी पूना के लिए फीडर स्कूल थे।

क्रियाकलाप 2.2

इन्टरनेट का प्रयोग करके खेलों का इतिहास समझने के लिए सम्बन्धित लिंक को देखें। https.//www.theattantic.com/video/index/558279/historyofsports

इस पर एक पृष्ठ की एक संक्षिप्त रिपोर्ट बनाएं।

पाठगत प्रश्न 2.3

1. शिक्षा की इस्लामिक पद्धति के अनुसार स्कूलों को .... और .... कहा जाता था।
2. मध्यकालीन भारत में सैनिकों को सैन्य अध्ययन में पढ़ाए जाने वाले विषय क्या थे?
3. मध्यकालीन भारत में सेना के त्रिस्तरीय प्रशिक्षण का वर्णन कीजिए।

आपने क्या सीखा

- प्राचीन भारत में सैन्य अध्ययन की शिक्षा आश्रमों और गुरुकुलों के माध्यम से होती थी।
- युद्ध प्रशिक्षण के लिए विशिष्ट स्कूल थे।
- खेलों को सैनिक के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता था। इससे शारीरिक अनुकूलता और युद्ध कौशल बढ़ाने में सहायता मिलती थी।
- सैनिकों को व्यक्तिगत कौशल और एक इकाई के रूप में मिलकर कौशल दिखाने के लिए प्रशिक्षत किया जाता था।
- समय के साथ तथा नए हथियारों और गोला बारूद के आने से सैनिकों का युद्ध के लिए प्रशिक्षण भी बदल गया।
- मध्यकालीन भारत में शिक्षा के लिए मुस्लिम प्रणाली को अपनाया जाता था। यद्यपि सैन्य प्रशिक्षण को त्रिस्तरीय पक्षों में प्रशिक्षण के रूप में दिया जाता है।
- ब्रिटिश इन्डिया ने सेना के सिपाहियों के प्रशिक्षण का स्वरूप बदल दिया। सैनिकों की शिक्षा प्रणाली को औपचारिक रूप दिया गया। रेजीमेण्टल केन्द्र सैनिक प्रशिक्षण की रीढ़ की हड्डी बन गए थे।

पाठान्त प्रश्न

1. सेना के लिए शारीरिक शिक्षा के महत्व को स्पष्ट कीजिए।
2. सामूहिक प्रशिक्षण का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
3. मध्यकालीन भारत में सैनिक प्रशिक्षण और इकाई प्रशिक्षण में अन्तर कीजिए।

टिप्पणी

4. अंग्रेजों द्वारा बच्चों के लिए शुरु किए गए किन्हीं चार स्कूलों के नाम लिखिए।

5. सेना में खेलों के महत्व को लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1 1. क) यह एक आवासीय स्कूल था।

ख) गुरु और शिष्य एक साथ रहते थे।

ग) गुरु, सेना से सम्बन्धित विषय पढ़ाते थे।

2. तक्षशिला, नालन्दा और बल्लभी स्कूल

3. कलारी

4. 10 वर्ष

2.2 1. महेन्द्रस्थान

2. धनुर्वेद, नीतिशास्त्र, हाथियों एवं रथों को साधने की शिक्षा

2.3 1. मकतब और मद्रसे

2. (क) निजी हथियार (तलवार, बरछी, तीर-कमान)

(ख) घुड़सवारी

(ग) वीरता

3. (क) लड़ने के लिए प्रशिक्षण

(ख) खेल और मुकाबले

(ग) निरीक्षण